13

हुंडरू का जलप्रपात (यात्रा संस्मरण)

रचनाकार का परिचय : कामता प्रसाद सिंह 'काम', जन्म – 1916 ई. औरंगाबाद, बिहार। मृत्यु –1963 ई0, प्रमुख रचनाएँ :– मैं छोटानागपुर में हूँ, घर गाँव और देहात, घुमक्कड़ की डायरी इत्यादि।

अधिगम प्रतिफल :

- विभिन्न प्रकार की सामग्री (यहाँ यात्रा संस्मरण विधा) को पढ़ते हुए अथवा पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाते हैं, विश्लेषण करते हैं, विशेष बिंदु खोजते हैं।
- लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी ढंग से लिखते हैं।
- किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए जरूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री–मानचित्र, इंटरनेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं।

पाठ का परिचय – प्रस्तुत पाठ में झारखंड की प्राकृतिक सुषमा का बड़ा ही मनोरम चित्रण किया गया है। लेखक द्वारा अपनी यात्रा के क्रम में पड़ने वाले जंगल, नदी और पहाड़ के लुभावने दृश्य के साथ–साथ जनजातीय लोक–संस्कृति का रोचक वर्णन सौंदर्यबोध और कौतूहल जगाए रखता है। यह यात्रा– वृन्तांत जब लिखा गया था तब झारखण्ड एक अलग राज्य नहीं बना था। वर्त्तमान में परिस्थितियाँ बदल गई हैं, मगर इस यात्रा–संस्मरण से हमें पूर्व में मौजूद यहाँ के वातावरण एवं परिस्थितियों का पता चलता है। यहाँ 'छोटानागपुर ' शब्द का आशय वर्त्तमान झारखण्ड है।

सार संक्षेप / सारांश

हुंडरू एक जलप्रपात है जो झारखंड राज्य के छोटा नागपुर जिले में पड़ता है। यह राँची से 27 मील की दूरी पर स्थित है। यह जलप्रपात अत्यंत सुंदर और मनमोहक है। इसकी यात्रा का मार्ग भी इतना ही रमणीय है।

© JCERT not to be republished

पहाड़, जंगल, घाटियों, नदियों को पार कर हुंडरू के जलप्रपात तक पहुँचा जाता है। आदिवासियों का गीत, पशु–पक्षियों की आवाज से यह यात्रा आनंददायक हो जाती है। हरियाली संपन्न यह प्रदेश जादू की तरह मन को मोह लेता है।

खनिजों से संपन्न इस इलाके में कहीं कोयला तो कहीं अबरख के खान मिलते हैं। यहाँ के लोग गरीब और सीधे–सादे हैं। हुंडरू के जलप्रपात स्थल की शोभा देवलोक जैसी है। 243 फीट ऊँची जगह से गिरता यह प्रपात पहाड़ों को चीरता पत्थर पर जिस समय गिरता है, उसका स्वरूप अत्यंत आकर्षक दिखता है। पानी गिर गिरकर 20–20 फीट उछलता है। इससे (प्रपात) आगे का दृश्य और भी अधिक मोहक है। उससे आगे भी ऊँचे–ऊँचे प्रपात हैं लेकिन उन तक पहुँचना कठिन है। पहाड़ के ऊपर से नीचे तक पतली पगड्ंडी से चलकर घाटी की शोभा भी वर्णनीय है। साँप के आकार की पतली–पतली नदियों के किनारे, रंग–बिरंगे पत्थर के विभिन्न आकार–प्रकार में बड़े ही सुंदर लगते हैं।

हुंडरू की शोभा प्रकृति प्रदत्त है। वहाँ दुकानों का अभाव है। खाने–पीने की चीजें नहीं के बराबर मिलती हैं। प्रपात की ध्वनि दूर से ही लोगों को आकर्षित कर लेती है। हुंडरू का जलप्रपात दर्शनीय है।

(गद्यांश की व्याख्या –1)

'छोटानागपुर स्वर्ग का एक टुकड़ा है।' .... यही झरना है जिसके बारे में लिखते हुए मैं अघाता नहीं।'' (पृ. सं. 96–97)

शब्दार्थ –

प्रपात	–	झरना
नीलिमा	–	नीलापन
तीव्रधारा	–	तेज धारा
पर्वतों का अंतर	–	पर्वतों का दृश्य
तरद्दुद	–	परेशानी
द्रुतगति	–	तेज गति
गुलजार	–	आनंद और शोभा से भरपूर
अवर्णनीय	–	जिसका वर्णन न हो सके

© JCERT not to be republished

दर्शनीय — देखने योग्य

खरादना — काट—छील कर आकार देना

शलिग्राम — एक प्रकार का पत्थर

लेखक ने हुंडरू के जल प्रपात का वर्णन करते हुए पहला पंक्ति में 'छोटानागपुर को स्वर्ग का एक टुकड़ा कहा है। यहाँ छोटानागपुर से उनका तात्पर्य पूरा झारखंड प्रदेश है। इसकी प्राकृतिक सुंदरता इसकी विशेषता है। हरी—भरी जमीन, नीला आसमान, बलखाती नदियाँ, ऊँचे पहाड़, जंगल और बेहतर सड़क जो टेड़ी मेढ़ी पहाड़ों तक जाती हुई बहुत सुंदर लग रहे हैं। आदिवासियों का सुंदर नृत्य, मधुर गीत, पशु—पक्षी और जंगली जानवरों की आवाज से पूरा वातावरण गुंजित हो रहा है। प्रकृति का यह रूप आँखों को ठंढक और नमी प्रदान करते हैं, कल्पना को सुंदर खुराक मिलती है और मन स्वच्छ तथा निर्मल हो जाता है। प्रकृति की सुंदरता के साथ विभिन्न खनिज, फल—फुल, घाटियाँ, नदियाँ, हरे—भरे मैदान, आकर्षक पर्वत, और यहाँ के मस्त निवासी छोटानागपुर की पहचान है। ऐसा लगता है जैसे पृथ्वी अपने खजाने से सोना उगल रही है। पृथ्वी अपनी चमक से अबरक के रूप में पूरी दुनिया का श्रृंगार कर रही है शायद आप जानते हों कि बाजार में मिलने वाले सौंदर्य उत्पादों में अबरक का उपयोग किया जाता है। नदियों के तराशे पत्थर शालिग्राम के रूप में पूजे जाते हैं। पत्थरों से बहने वाले झरना करूणा की धार प्रतीत होते हैं। छोटानागपुर में वैसे तो कई झरने हैं लेकिन हुंडरू का जल प्रपात लेखक को विशेष प्रभावित करता है।

प्रश्न 1. छोटानागपुर को क्या कहा गया है ?

प्रश्न 2. जंगली जानवरों को किसने शरण दिया है ?

प्रश्न 3. पहाड़ और मैदान किससे गूँज रहे हैं ?

प्रश्न 4. छोटानगपुर की विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए ?

(गद्यांश की व्याख्या – 2)

राँची से पुरूलिया वाली सड़क पर चौदह मील जाने के बाद एक सड़क मिलती है जिससे हुंडरू पहुँचते हैं। .... वातावरण की पतित्रता ऐसी कि मालूम होता है, मानो हम देवलोक के समीप पहुँच गए। (पृष्ठ संख्या— 97—98)

शब्दार्थ –

मील — दूरी मापने की पुरानी इकाई। मील लगभग 1.6 किलोमीटर।

not to be republished © JCERT

साध्य – जिससे साधना की जाती है।

दर्शनीय – देखने योग्य।

वर्णनीय – वर्णन योग्य।

व्याख्या –

हुंडरू जल प्रपात के सौंदर्य का वर्णन करने के बाद लेखक वहाँ तक पहुँचने के रास्ते के बारे में बताते हैं। राँची से पुरूलिया जाने वाली सड़क पर लगभग 14 मील (1.6) किलोमीटर जाने पर एक सड़क मिलती है जिससे हम हुंडरू पहुँचते हैं। यह राँची से लगभग 43 की. मी. (27मील) दूर है।

महात्मा गाँधी के कथनानुसार महान लक्ष्य तक पहुँचने का रास्ता भी महान होना चाहिए। हुंडरू जल प्रपात के रास्ते भी ऐसे ही सुहाने हैं। हरे–भरे मैदान, घने जंगल, खेत खलिहान, बलखाती सड़कें, पत्थर के बीच पतली नदी, चिड़ियों का चहचहाना, धीरे–धीरे चलने वाली हवा सब मनोरम थे। यहाँ के निवासी सहज–सरल–सादगी के अवतार जिनके रहन–सहन में कला बसती है। दूर से ही पानी की धमा चौकड़ी की आवाज पर्यटक को आर्कषित कर लेती है जैसे –हाथी के चिंघारने की आवाज हो या दस–पाँच ट्रेन के इंजन हों या सैकड़ो नाग साँप एक साथ फुंफकार रहे हों। वातावरण की पवित्रता को देखकर स्वर्ग में पहुँचने जैसा आनंद होता है।

प्रश्न 5. राँची से हुंडरू कितनी दूर है ?

प्रश्न 6. किसने कहा है कि साध्य की पवित्रता एवं महत्ता तभी है जब उसका साधन भी महान हो ?

प्रश्न 7. हुंडरू जलप्रपात तक पहुँचने वाले मार्ग की सुंदरता का वर्णन कीजिए ?

(गद्यांश की व्याख्या –3)

" है क्या यह! युग–युग से पानी का आघात है .... मानो आग की सृष्टि करता है जिसका धुआँ बराबर ऊपर उड़ता रहता है।" (पृष्ठ संख्या– 99–100)

शब्दार्थ –

आघात – चोट

सतरंगा – इंद्रधनुष

गुलाबपाश – गुलाब जल छिड़कने का झारी के आकार का लंबा पात्र।

not to be republished © JCERT

अनिमेष	–	बिना पलक झपकाए	बर्दाश्त	–	सहन करना
धुनकी	–	रूई धुननेवाला धनुष			

व्याख्या –

हुंडरू के जलप्रपात की स्वर्गिक सुंदरता को देखकर लेखक को लगता है कि यह जल करूणा का है जो पाषाण हृदय की तरह पत्थर को पिघलाते हुए बह रही है। यह चोट पहुँचाने और बर्दाश्त करने के क्रम में क्षमता का प्रदर्शन है।

स्वर्ण रेखा नदी पर अवस्थित यह झरना स्वर्णरेखा नदी के उद्गम स्थान से 50 मील की दूरी पर है। इसकी ऊँचाई 243 फुट है। इसके सफेद झाग वाले पानी की तुलना लेखक ने पत्थर के सफेद चुर्ण, धुनकी पर धुनी हुई रूई, सफेद हवा मिठाई से की है। जल की यह धारा इंद्रधुष से रंग भी बिखेरती है। इस झरने के एक तरफ राँची का जंगल है और एक तरफ हजारीबाग का जंगल। यह झरना किसी एक जिला का नहीं बल्कि सबके कल्याण के लिए है। इसके बगल से निकलती एक ईंच की धार जब पत्थर पर गिरती है तो ऐसा लगता मानो शिवजी पर दुध चढ़ाया जा रहा हो। लेखक के मित्र ने बताया कि ऐसा माना जाता है कि शिव जी की बारात इधर से ही गई थी। उसके स्वागत के लिए गुलाबपाश के आकार का यह झरना यहाँ अवस्थित है। पहाड़ो के बीच पतली नदी ऐसी लगती है मानो थर्मामीटर में पारा हो। यहाँ का पानी पत्थरों से टकराकर चट्टान पर गिरता है और इसका धुआँ ऊपर उड़ता रहता है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :–

प्रश्न 8. हुंडरू का जलप्रपात स्वर्णरेखा नदी के उद्गम स्थान से कितनी दूरी पर है ?

प्रश्न 9. हुंडरू जलप्रपात के सफेद झागवाले पानी की तुलना किससे की गई है ?

(गद्यांश की व्याख्या –4)

"हुंडरू का पानी कहीं साँप की तरह चक्कर काटता है .... लेकिन पानी आँखों के सामने उसी प्रकार उछल–कूद मचा रहा है।"

शब्दार्थ –

दर्शनार्थी	–	दर्शन के लिए आए व्यक्ति	रूदन	–	रोना
पाषाण	–	पत्थर	द्रवित	–	पिघलना

© JCERT not to be republished

कलह	–	झगड़ा	कपट	–	छल
स्वार्थ	–	अपना मतलब	विचलित	–	घबराना
अविरल–		लगातार	अतिचल	–	स्थिर
गुमान	–	गर्व	प्रवाह	–	धारा

व्याख्या –

लेखक हुंडरू के जलप्रपात का वर्णन करते हुए पानी की गति और उत्पात को साँप की तरह लहरदार, हरिण की तरह चंचल और बाघ की तरह चिंघारने वाला बताया है। विशाल जलराशि का गिरना और धीमी गति से नदी रूप में बहना ही इसकी सुंदरता है जिसे देखने लोग आते हैं। डिस्ट्रिक बोर्ड ने यहाँ रहने के लिए बंग्ला बनाया है। लेकिन खाने–पीने की चीजें और स्थानीय बाजार नहीं है। लेखक इसे महाकवि की वाणी, संगीत स्वर लहरी और किसी प्रेमी के रोने की आवाज से पिघलकर यह पत्थर बह रहा है जैसा इसे माना है।

यहाँ के पत्थर दो तरह के हैं। एक तो वे जिन्हें तोड़ता हुआ पानी नीचे गिरता है और एक वे जिनपर पानी गिरता है। 243 फुट का यह प्रपात काफी सुंदर है। प्रकृति अपने दान का कभी घमंड नहीं करती। जिस प्रकार समुद्र अपनी गंभरिता के लिए प्रसिद्ध है, उसी प्रकार हुंडरू अपनी चपलता के लिए मशहूर है।

सुनी–सुनाई बात है कि इससे सात मील आगे एक और प्रपात है जो बहुत सुंदर है। लेखक कहते हैं कि यदि यह सत्य है तो इस प्रपात तक जाने का रास्ता भी सुगम करवाना चाहिए। लेखक हुंडरू की याद भूल नहीं सकते। इसका पानी उनकी आँखों के सामने उछल कूद मचाता रहेगा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :–

प्रश्न 10. हुंडरू के पानी का वर्णन लेखक ने किस प्रकार किया है ?

प्रश्न 11. हुंडरू के जलप्रपात के पास ठहरने और खाने–पीने की क्या सुविधाएँ उपलब्ध हैं ?

प्रश्न 12. हुंडरू का जलप्रपात कितना ऊँचा है ?

© JCERT not to be republished

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न :—

13. 'जैसे हुंडरू का झरना वैसे उसका मार्ग।'' इस कथन की व्याख्या कीजिए ?

14. ''स्वयं झरने से भी ज्यादा खूबसूरत मालूम होता है, झरने से आगे का दृश्य '' उस सुंदरता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ?

15. हुंडरू का झरना कैसे बना है ?

16. प्रस्तुत पाठ के आधार पर समझाइए कि किसी यात्रा—वृत्तांत को रोचक बनाने के लिए किन—किन बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए ?

बहुवैकल्पिक :—

17. हुंडरू का जलप्रपात किस नदी पर निर्मित है ?

(क) स्वर्ण रेखा नदी पर

(ख) दामोदर नदी पर

(ग) कोयल नदी पर

(घ) मयूराक्षी नदी पर

18. हुंडरू का जलप्रपात किस राज्य में है?

(क) झारखंड (ख) बिहार

(ग) पश्चिम बंगाल (घ) उड़ीसा

19. हुंडरू का जलप्रपात पाठ के लेखक कौन है?

(क) रामवृक्ष बेनीपुरी (ख) कामता प्रसाद सिंह 'काम'

(ग) प्रेमचंद (घ) फणीश्वरनाथ रेणु

20. हुंडरू का जलप्रपात कितना फीट ऊँचा है ?

(क) 223 फीट (ख) 230 फीट

(ग) 223 फीट (घ) 243 फीट

© JCERT not to be republished

21. लेखक ने स्वर्ग का टुकड़ा किसे कहा है ?

(क) वियावान भूमि (ख) जंगल

(ग) जलप्रपात (घ) छोटानागपुर

22. हुंडरू का जल प्रपात राँची से कितने किलोमीटर की दूरी पर है ?

(क) 25 (ख) 27

(ग) 30 (घ) 32

23. हुंडरू का जल प्रपात में किस संस्कृति का वर्णन है ?

(क) आदिवासी संस्कृति (ख) मुस्लिम संस्कृति

(ग) सिख संस्कृति (घ) ईसाई संस्कृति

24. हुंडरू का पानी किसकी तरह चक्कर काटता है ?

(क) बिल्ली (ख) चूहा

(ग) नेवला (घ) साँप

25. 'जैसा हुंडरू का झरना, वैसा उसका मार्ग' किसने कहा ?

(क) लेखक ने (ख) लेखक के दोस्त ने

(ग) सैलानियों ने (घ) वहाँ के निवासियों ने

26. पुरूलिया रोड से हुंडरू की दूरी कितनी है ?

(क) 03 मील (ख) 13 मील

(ग) 123 मील (घ) 33 मील

© JCERT not to be republished

पाठ्पुस्तक से प्रश्नोत्तर :–

प्रश्न 1– 'छोटानागपुर स्वर्ग का एक टुकड़ा है।' कैसे ?

उत्तर– लेखक ने 'छोटानागपुर' जो वर्त्तमान में झारखण्ड है की तुलना स्वर्ग से करते हुए कहा है कि 'छोटानागपुर स्वर्ग का एक टुकड़ा है।' वास्तव में ईश्वर ने झारखंड को प्राकृतिक रूप से अत्यंत सौंदर्यशाली एवं समृद्ध बनाया है। यहाँ के आदिवासी सदैव आनंद के वातावरण में निमग्न रहते हैं। पक्षियों के कलरव, नृत्य और मादक गीतों से यहाँ के पहाड़, जंगल और मैदान गूँजते रहते हैं। यहाँ जलवायु स्वास्थ्यवर्द्धक है जिससे आदिवासी सदैव स्वस्थ्य रहते हैं। नदियाँ अपने किनारे पर रहने वाले लोगों को अमृत बाँटती है। झरने मन को स्वच्छता और पवित्रता प्रदान करते हैं। खानों में कोयला और अबरक, जंगल में तरह–तरह की लकड़ी फल–फूल आदि झारखंड का कोश भर रहे हैं। समग्रतः छोटानागपुर स्वर्ग का एक टुकड़ा प्रतीत होता है।

प्रश्न 2. हुंडरू जलप्रपात की विशेषताएँ लिखिए ?

उत्तर– हुंडरू जल प्रपात की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है :–

(i) यह झारखण्ड में स्थित है।

(ii) इसकी प्राकृतिक सुषमा निराली है।

(iii) यह 243 फुट की ऊँचाई से नीचे गिरता है।

(iv) इसका सफेद पानी का झाग देखकर मन निर्मल हो जाता है।

(v) इसका जल कभी साँप की तरह चक्कर काटता है तो कहीं हिरण की तरह छलाँग मारता है।

(vi) इसका पानी जहाँ नीचे गिरता है वह विशाल और भयंकर लगता है।

(vii) इसके बाद धीरे–धीरे मंथर गति में इसका जल नदी के रूप में प्रवाहित होता है जिसे देखने पर्यटक आते हैं।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 3– लेखक ने पाठ में किस किंवदंती की बात की है और क्या सलाह दी है?

उत्तर– लेखक ने पाठ में कहा है कि किंवदंती के अनुसार इस हुंडरू से सात मील पर कुछ लोगों ने एक प्रपात देखा है जो इससे कई गुणा बड़ा है, पर वहाँ जाने का रास्ता इतना बीहड़, घनघोर और भयंकर है कि जंगल के उस भाग में पहुँच सकना दुश्वार है। इस संबंध में लेखक ने यह सलाह दी है कि अगर बात सही है, तो जंगल विभाग को उसका ठीक से पता लगाकर वहाँ तक मार्ग का निर्माण कर देना चाहिए, जिससे वह प्रपात भी जनता के सामने आ सके।

प्रश्न 4– 'एक ओर पृथ्वी अपने कोश को उगल रही है, तो वह कोयला बनाकर लोगों के घरों में सोना ला रहा हैं' –

भाव स्पष्ट करें।

उत्तर– इस पंक्ति के माध्यम से लेखक कहना चाहत है कि झारखंड की धरती खनिज संसाधनों से समृद्ध है। लोहा, बॉक्साइट, अबरक, ताँबा, चुना–पत्थर आदि से तो झारखंड का खजाना भर ही रहा है, साथ ही कोयले की यहाँ इतनी प्रचुरता है कि उसके माध्यम से लोग भी सुखी संपन्न हो रहे हैं।

भाषा संदर्भ

'सुंदर जलवायु, मनोहर वातावरण। हवा धीरे–धीरे डोलती है तो अपने साथ फूलों की सुरभि बिखेरती चलती है। बादल धीरे–धीरे बरसते हैं तो उनसे स्वस्थ शरीर और सुंदर स्वास्थ्य का वरदान मिलता है। नदियाँ कलकल–छलछल स्वर में बाँटती जाती है।'

इन पंक्तियों को ध्यान में रखकर एक कविता बनाएँ।

उत्तर– **हुंडरू का जल प्रपात**

ऊँचे पर्वत और निर्झरणी

दृश्य मनोरम खनिज धरिणी

जलवायु सुंदर, मनोहरणी

सुरभि फूलों की, मंद वात

देखें हुंडरू का जल–प्रपात

© JCERT not to be republished

अंबर को घेरे काले बादल

नदियाँ बहती कल–कल, छल–छल

उत्पात मचाती अमृत धारा धवल

मन निर्मल स्वस्थ और सुंदर गात

देखें हुंडरू का जल–प्रपात

2. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण कीजिए :–

स्वर्ग, पर्वत, अवर्णनीय

इन शब्दों में 'ए' स्वर रहित (र्) है। यह जिस स्थान पर उच्चरित होता है, उसके अगले वर्ण के ऊपर लिखा जाता इसे 'रेफ' कहते हैं। इन्हें निम्नलिखित प्रकार से लिखकर इनका सही उच्चारणनीय। समझा जा सकता है – स्वरग, परवत, अवरणनीय,। रेफ का प्रयोग करते समय सावधानी बरतनी चाहिए। पाठ में आए रेफ वाले शब्दों की सूची बनाइए।

उत्तर– प्रदर्शन, संघर्ष, दर्शनीय, मार्ग, मार्गदर्शन, मूर्ति, वर्षो।

गद्यांश के प्रश्नोत्तर

उत्तर 1– छोटानागपुर को स्वर्ग का एक टुकड़ा कहा गया है।

उत्तर 2– जंगल के अंतर्गत झाड़ी–झुड़मुट, पेड़–पौधे, लता–गुल्म आदि ने जंगली जानवरों को शरण दिया है।

उत्तर 3– इस सुरम्य प्रदेश में जन–जन मादक गीत गा रहें हैं, इनसे पहाड़ और मैदान गुँज रहे हैं।

उत्तर 4– छोटानागपुर की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :–

(i) यहाँ की प्राकृतिक छटा निराली है।

(ii) यह खनिजों से संपन्न है।

(iii) यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यवर्द्धक है।

© JCERT not to be republished

(iv) आदिवासी सस्कृतिकी अनुगूँज वातावरण में रहती है।

(v) यहाँ कई दर्शनीय स्थल हैं।

उत्तर 5— राँची से हुंडरू 27 मील (लगभग 43 की मी.) दूर है।

उत्तर 6— महात्मा गाँधी।

उत्तर 7— हुंडरू जल—प्रपात तक पहुँचने का मार्ग बहुत ही सुंदर है। हरे—भरे मैदान, घने जंगल, खेत खलिहान, बलखती सड़के, पत्थर के बीच पतली नदी, चिड़ियों का चहचहाना, धीरे—धीरे चलने वाली हवा बहुत ही मनोरम है। बीच में यहाँ के लोगों की सादगी और आदिवासी संस्कृति की झाँकी भी मिलती है। रास्ते से ही जलप्रपात के गिरने और पानी की धमाचौकड़ी की आवाज सुनाई देती है।

उत्तर 8— 50 मील।

उत्तर 9— हुंडरू जलप्रपात के सफेद झाग वाले पानी की तुलना निम्नलिखित से की गई है :—

(i) पत्थर के सफेद चूर्ण

(ii) धुनकी पर धुनी हुई रूई

(iii) सफेद हवा मिठाई

उत्तर 10— लेखक ने वर्णन किया है कि हुंडरू का पानी कहीं साँप की तरह चक्कर काटता है, कहीं हिरण की तरह छलाँग मरता है और कहीं बाघ की तरह गरजता हुआ नीचे गिरता है।

उत्तर 11— हुंडरू के जलप्रपात के पास ठहरने के लिए डिस्ट्रिक बोर्ड ने एक बंग्ला बनवा दिया है। खाने—पीने की वस्तुएँ कम ही मिलती हैं।

उत्तर 12— हुंडरू का जलप्रपात 243 फुट ऊँचा है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 13— हुंडरू का झरना अत्यंत आकर्षक, मनमोहक और आनंददायक है। उसी प्रकार हुंडरू जाने का मार्ग भी आकर्षक, मनमोहक और आनंददायक है। मार्ग में बीहड़ जंगल जिसमें हिंसक जीवों की आवाज के साथ—साथ विविध पक्षियों का कलख मनमोहक लगता है। हरे—भरे खेतों की हरियाली रास्ते का आनंद और भी बढ़ा देती है। जैसे हुंडरू के

© JCERT not to be republished

जलप्रपात से उत्पन्न धवल झाग मन के विकारों को दूर करती प्रतीत होती है, वैसे ही यहाँ तक पहुँचने का मार्ग मन को निर्मल कर देता है।

उत्तर 14— हुंडरू के झरने से भी ज्यादा खूबसूरत मालूम होता है उसके आगे का दृश्य। आगे घाटी है। पहाड़ों के बीच पतली नदी, नदी के इर्द–गिर्द पत्थरों का अंबार उस पर झाड़ी। संपूर्ण दृश्य प्राकृतिक और मनोरम है। इसी सुंदरता पर मुग्ध होकर लेखक ने इसे स्वर्ग से भी अधिक खूबसूरत कहा है।

उत्तर 15— स्वर्ण रेखा नदी पहाड़ को पार करने के लिए अनेक भागों में विभक्त हो जाती है। पुनः एक जगह होकर पहाड़ से उतरती है। इस झरने का पानी 243 फीट ऊपर से गिरता है।

उत्तर 16— प्रस्तुत पाठ हुंडरू का जल–प्रपात एक यात्रा–संस्मरण है। किसी भी यात्रा–वृतांत को रोचक बनाने के लिए प्राकृतिक सौंदर्य के साथ–साथ वहाँ के सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति का वर्णन भी अनिवार्य है। भाषा प्रवाहमयी हो। प्रकृति का वर्णन चित्रात्मक होना चाहिए।

बहुवैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर

17. — (क) स्वर्णरेखा नदी पर

18. — (क) झारखंड

19. — (ख) कामता प्रसाद सिंह 'काम'

20. — (घ) 243 फीट

21. — (घ) छोटानागपुर

22. — (ख) 27

23. — (क) आदिवासी संस्कृति

24. — (घ) साँप

25. — (क) लेखक ने

26. — (ख) 13 मील

© JCERT not to be republished